बोस्टन यात्रा ने बदल दी ज़िंदगी

मैत्रेयी दोषी

साभार: मैत्रेयी दोषी

1998 में मेसाच्यूसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नॉलोजी में जूनियर सम्मेलन के दौरान मैत्रेयी दोषी।

जब मैं सोलह साल की थी तो 1998 में बोस्टन, अमेरिका जाने के लिए पहली बार विमान में सवार हुई। मुझे मेसाच्यूसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी द्वारा प्रायोजित एक कार्यक्रम में भागीदारी करनी थी। उस यात्रा के बारे में मैं अब सोचती हूं तो मुझे लगता है कि एमआईटी के उस जूनियर छात्रों के सम्मेलन में भागीदारी ने मेरी ज़िंदगी बदल दी।

इस सम्मेलन में भागीदारी ने मेरा जानकारी का दायरा बढ़ाया। मुझे सूचना प्रौद्योगिकी की तेज़ी से बढ़ती दुनिया से रूबरू होने का मौका मिला और इसने मुझे ऑनलाइन समुदायों के बारे में ज़्यादा जानने को प्रेरित कर दिया। जूनियर सम्मेलन में 54 देशों के सौ छात्रों ने भागीदारी की। इसमें चर्चा का मुद्दा था कि कैसे प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल दुनिया के बच्चों की समस्याएं दूर करने में किया जाए। हमने छह माह इस मसले पर चर्चा और अपने खुद के ऑनलाइन समुदाय में मशगूल रहकर बिताए। इंटरनेट पर लोगों के साथ जुड़ने और अपने विचार व्यक्त करने का पहला अनुभव मिला और हमने जाना कि कैसे एक-दूसरे के अनुभवों को जानकर हम समाज में ज़्यादा सशक्त भूमिका अदा कर सकते हैं।

जूनियर सम्मेलन के बाद मैंने टेकिंगग्लोबल डॉट ओआरजी नामक ऑनलाइन समुदाय से नाता जोड़ लिया। युवाओं द्वारा संचालित और उन्हीं के आइडिया पर आधारित यह वेबसाइट ऐसे ऑनलाइन समुदाय उपलब्ध करा रही है जहां दो सौ से भी ज़्यादा देशों के किशोरों और युवाओं को आपस में संपर्क का लाभ मिल रहा है और खास बात यह है कि यह संपर्क लगभग उसी तरह वास्तविक और अर्थपूर्ण होता है जैसे कि आप किसी से आमने-सामने बैठकर बात कर रहे हों।

यहां मेरी मुलाकात अनूठे लोगों से हुई जिन्होंने मुझे अपने समाज में बदलाव लाने के लिए प्रेरित किया। मैंने यहां जाना कि सिर्फ पढ़ने और डिग्री लेने के अलावा भी ज़िंदगी में बहुत कुछ है। मुझे याद है कि मैं सुबह दो बजे इंस्टैंट मेसेंजर पर बोर्ड बैठक के लिए उठ जाती। जब दुनिया के अलग-अलग देशों के लोग इस तरह की बैठक कर रहे हों तो किसी न किसी को तो रात के इस पहर में जागना होगा। किसी परियोजना के बारे में अपने विचार प्रकट करने और फैसले लेने के लिए इस तरह की बैठकें होती थीं। मुझे याद है कि जब हमारी एक परियोजना असफल हो गई तो मैं निराश हो गई और खूब रोई। जब मैं पहली बार अपने ऑनलाइन दोस्तों से वास्तव में मिली तो बेहद खुश हुई। अपने दोस्तों को अपने आसपास के समुदाय में बदलाव लाते देखकर मुझे भी प्रेरणा मिलती और समाज के लिए कुछ करने का मन होता।

मेरे द्वारा तैयार ऑनलाइन समुदाय ने पिछले नौ साल में मेरी ज़िंदगी और कॅरिअर में अहम भूमिका निभाई है। इसने मुझे बेहतर व्यक्ति बनाया है और मैं नए तरीके से सोच सकती हूं। मैंने जून 2007 में मैरीलैंड इंस्टीट्यूट कॉलेज ऑफ़ आर्ट से कम्युनिटी आर्ट में स्नातकोत्तर डिग्री हासिल की है। मुझे उम्मीद है कि इस डिग्री की बदौलत में यह जान सकूंगी कि समाज में सकारात्मक बदलाव के लिए कला का इस्तेमाल कैसे कर सकती हूं। मैं कभी-कभी सोचती हूं कि उस जूनियर सम्मेलन में भाग लेने के लिए अमेरिका नहीं आती तो ज़िंदगी क्या होती। सोचते हुए भी डर लगता है।

बहरहरल, टीआईजी के नाम से मशहूर ऑनलाइन समुदाय अब बड़े इरादे लेकर चल रहा है और संयुक्त राष्ट्र के सहस्राब्दी विकास लक्ष्य, डिजिटल खाई और एचआईवी-एड्स जैसे मुद्दों से दो-चार हो रहा है।

साभार: टेकिंगआईटीग्लोबल डॉट ओआरजी

टेकिंगआईटीग्लोबल डॉट ओआरजी पर दो सौ से भी ज़्यादा देशों के युवा अपने ऑनलाइन समुदाय बनाकर एक-दूसरे के साथ संपर्क बना रहे हैं।

टीआईजी विश्वभर में डिजिटल खाई को दूर करने और इन लक्ष्यों को सूचना प्रौद्योगिकी के अंतरराष्ट्रीय समझौते में शामिल कराने में सक्रिय रही है। टीआरजी की शुरुआत वर्ष 2000 में हुई। इसका नारा है : प्रेरणा, सूचना और भागीदारी।

वाशिंगटन डी. सी. स्थित अमेरिकन यूनिवर्सिटी के सामाजिक मीडिया केंद्र द्वारा इंटरनेट पर युवाओं की प्रवृत्ति पर किए गए अध्ययन के अनुसार विश्वव्यापी मुद्दों पर चर्चा में भागीदारी करने वाले युवाओं के लिए यह बेहद लोकप्रिय माध्यम है। इस पर ऐसी बहुत सी सुविधाएं उपलब्ध हैं जिनके जरिये युवा अपना नज़रिया व्यक्त कर सकते हैं और अपने आसपास की दुनिया के बारे में बहुत कुछ जान सकते हैं।

***मैत्रेयी दोषी** वाशिंगटन डी.सी. में रहती हैं। यह लेख उन्होंने यूएसइनफो के लिए लिखा।*